धर्म जीवन

मार्च 2006

मैं चाहता हूँ

हम सब देवात्मा के सन्तापक हैं

पारिस्परिक सम्मान

महोत्सव पर पब्लिक लैक्चर

टैगोर थियेटर में माता पिता दिवस

रूड़की में सभाएं

शुभ संग्राम

मैं चाहता हूँ!

मैं चाहता हूँ और बार बार चाहता हूँ, और बहुत व्याकुल होकर चाहता हूँ, कि मुझे ऐसे अधिकारी आत्मा मिलें कि जिन के भीतर मेरे देव प्रभाव केवल कभी कभी वा कुछ काल के लिए नहीं, किन्तु प्रति दिन लगातार प्रवेश कर सकें। मैं चाहता हूँ कि मुझे ऐसे आत्मा प्राप्त हों, कि जो मेरे देव प्रभावों के आकांक्षी हों, और जो उन्हें अपने भीतर आकृष्ट और ग्रहण करने की योग्यता रखते हों, और वह मेरी देव ज्योति को पाकर वह कुछ देख सकें, जो मैं उन्हें दिखाना चाहता हूँ। उन्होंने अपनी उमर में औरो के सम्बन्ध में जब और जिस जिस प्रकार की हानिकारक क्रियाएं करके अपने अपने आत्मा की हानि की हो, और इस हानि के कारण उसे भ्रष्ट, विकारयुक्त, मैला, कठोर, कुत्सित और दुर्बल बनाया हो, वह उन्हें अपने बुरे, घृणित और डरावने रूप में दिखाई दे, और मेरे देव बल में उनके हृदयों में जहां तक सम्भव हो हलचल और एक वा दूसरे नीच गति से निकलने के लिए संग्राम उत्पन्न हो, और वह अपनी एक वा दूसरी नीच गति का बोध पाकर शान्ति से न रह सकें। मैं चाहता हूँ, कि उनके भीतर अपनी नीच गतियों को उपलब्ध करके बेचैनी पैदा हो और वह दुखी हों और जब तक वह अपनी किसी बोध प्राप्त नीच गति से मोक्ष पाने के लिए आवश्यक परिशोध विषयक साधन पूरे न कर लें, तब तक वह किसी तरह चैन न पा सकें। मैं चाहता हूँ, कि जहां तक जिस किसी आत्मा के लिए अपनी नाना नीच गतियों से मोक्ष पाना सम्भव हो, वहां तक उसे वह मोक्ष प्राप्त हो, और जहां तक कोई आत्मा अपने हृदय में उच्च भावों को विकसित करके अपने विविध सम्बन्धों में शुभ लाने के योग्य हो सकता हो, वहां तक उस के भीतर उन उच्च भावों का विकास हो। मैं ऐसे अधिकारी आत्मा चाहता हूँ और बार बार चाहता हूँ। ऐसा हो कि मेरी यह महत्त्व आकांक्षा अधिक से अधिक सफल हो।

(देवात्मा)

पेज़ नं. 19 का बाकी

सभा में बैठकर दूसरे कई जन महान नज़र आते हैं, अपना आप नीच नज़र आता है। उन्होंने अपनी पुत्रवधु का भी वर्णन किया। एक और बुर्जुग ने अपने साढू साहिब के त्याग का वर्णन किया कि उन्होंने ससुराल से मिली ज़मीन में से अपना हिस्सा भी मुझे दे दिया। उनके प्रति अपने सत्कार से भरे दिल से ब्यान किया। एक और जन ने अपने पिता, भाई वा पत्नी के गुणों का वर्णन किया। उनके आंसु बह रहे थे, अपनी पत्नी पर ज्यादाती के लिए दुख का प्रकाश किया, क्षमा मांगी। यह सभा भी बहुत प्रभाव दायक थी। रात की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, जैसे वह पहले करवाते रहते है।

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 3
मार्च 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हम सब देवात्मा के सन्तापक हैं।

श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी (उच्च लोकवासी) बड़े सौभाग्यवान थे। उन्हें बचपन से ही देवात्मा के चरणों में रहने और उनके लिए सेवाकारी होने का सौभाग्य मिल गया। वह कई बार उस समय की गुरू महाराज के सम्बन्ध में घटनाएं बताया करते थे, जो उनके स्वंय के सम्बन्ध में घटी थी। एक घटना वह इस प्रकार बताते थे।

एक बार गुरू महाराज ने श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी की उंगली को पकड़कर बताया कि गुरूवन्त सिंह यदि तुम्हारी उंगली काट दें, तो तुम्हें कैसा अनुभव होगा। श्रीमान जी ने बताया कि बेहद दुःख और पीड़ा होगी। इस पर गुरू महाराज ने फरमाया कि तुम्हें यह दुःख इसलिए होगा क्योंकि यह उंगली तुम्हारे हाथ के साथ जुड़ी हुई है। जब आप कोई नीच गति करते हो और नीच बनते हो तो तुम्हें इसी प्रकार दुःख होना चाहिए - जैसे उंगली के काटने से होता है। इस प्रकार देवात्मा ने मनुष्य आत्माओं को अपने हित अनुरागी रूप को समझाने के लिए ठोस दृष्टांत देकर समझाने का प्रयास किया।

मेरी परलोकवासी भुआ जी को सोलन पर्वत - आश्रम पर जाने का सौभाग्य मिलता रहता था। उन्होंने कई बार बताया कि हम बच्चे बगीचे में खेलते हुए खट्टी बूटी तोड़कर खा लेते थे। कई बार हमें बूटी तोड़ते और खाते पकड़ लिया गया। एक दिन गुरू महाराज ने हमें अपने पास बुलाया और बाल पकड़ कर खींचें और पूछा कि क्या तुम्हें दर्द होता है, हमने बताया कि बहुत दर्द होता है। इस पर गुरू महाराज ने फरमाया कि जैसे बाल खींचने से आपको दर्द होता है, उसी प्रकार बूटी खींचकर तोड़ने से पौधे को भी दर्द होता है, और इससे मुझे भी बहुत दुःख लगता है।

देवात्मा के देव रूप के आद्वतीय गठन के कारण, वह पूर्ण हित अनुरागी होकर हमारे हित, भले वा विकास के लिए अटूट रूप से जुड़े हुए थे। इसलिए वह मनुष्यात्माओं के भीतर शुभ परिवर्तन को आता देखकर, जहाँ अपनी खुशी का प्रकाश करते थे, वहां हमें नीचे जाता देखकर, वह बेहद संग्राम करते थे। हम जो पहले भली गतियां करते थे, और फिर उन्हें छोड़ देते हैं, तो उनका दिल दुख से तड़प उठता है। उनकी इसी आद्वतीय तड़प ने उन्हें हमारे सर्व - हित के लिए अपना आद्वतीय जीवन ब्रत धारण करने के लिए और हमारे ही आत्मिक भले के लिए तिल तिल निस्सार होने के लिए, उनके देव स्वभाव के कारण नेचर ने उन्हें मजबूर कर दिया।

हम मनुष्य अपने सुखों के इश्क की प्रकृति रखने के कारण, नीच गतियां करने के लिए मजबूर हैं

और नीच बनने के लिए मजबूर हैं। परन्तु देवात्मा के देव स्वभाव के लिए अज़ाबों का दरिया पैदा कर देते हैं। मनुष्य आत्माओं में रहकर, मनुष्य पैर पैर पर देवात्मा को अपनी गतियों के द्वारा कैसे सूली पर लटकाते रहे, ऐसे अजाबों को सहकर भी उन्हें हमारा हित करना पड़ा और किया है, उनके ऐसे आद्वतीय हित स्वरूप का हम क्या अनुमान कर सकते हैं।

हम जो नीच क्रिया करके सुख प्राप्त करने के लिए और अपना नाश करने के लिए मजबूर हैं, देवात्मा के लिए हमारी वही क्रिया असीम अज़ाब सिद्ध होती है, उसी अज़ाब को सहते-सहते देवात्मा हमारा हित करने के लिए, यत्नशील होने के लिए मजबूर हैं।

हम, जो जन देवात्मा के पैदा किए जगत से जुड़ जाते हैं, वह विशेष दायरे में आ जाते हैं, तो हमारी नीच गतियां वा नीच जीवन उनके लिए और भी कहर ढाता है। गुरू महाराज के सेवक होकर, उच्च श्रेणीयां प्राप्त करके, उच्च कर्मचारी बनकर वा उच्च पद-धारी बनकर, हम मनुष्य जब नीच गतियां करते हैं, हम नीच आत्मा चाहे उनमें सुख अनुभव करते हैं, सुख के नशे में मदहोश रहते हैं, तो हम इस ठोस सच्चाई की ओर से अन्धे रहते हैं, कि हम अपने एक मात्र बचावनहार और तारणहार के लिए सेवाकारी होने वा ऋण परिशोध करने के स्थान पर उनके लिए अजाब पैदा करने का काम करते है, हम दिल से नहीं चाहते कि हम अपने परम उपकारी के लिए दुःखदायी बनें, परन्तु दुःखदाता बने रहते हैं।

हमारी मनुष्य प्रकृति मूल से ही दोष पूर्ण है। हम अपने परम उपकारी वा हितकारी को दुख देने के लिए मजबूर हैं, बेबस हैं। परन्तु इस अवस्था के प्रति सुचेत न रहने से हमारा यह दोष और बढ़ जाता है।

श्रीमान गण्डा सिंह जी गुरू महाराज के अच्छे सेवक थे और शायद सहायक कर्मचारी भी बन गए थे। वह लहौर गुरू महाराज की सेवा में रहते थे और कभी-कभी गुरू महाराज की बग्घी चलाने की सेवा भी उन्हें मिल जाती थी। एक दिन सैर के लिए जब गण्डा सिंह जी घोड़ा गाड़ी लेकर आए तो गुरू महाराज ने उनसे पूछा "गण्डा सिंह जी, आप सुबह उठकर अपने माता-पिता के चरणों में प्रणाम तो करते ही होंगे?" इस पर श्रीमान गण्डा सिंह जी ने कहा, महाराज, प्रणाम करना तो दूर, हम सुबह उठकर उनके साथ बुरा न बोलें तो और उनको दुखी न करें, तो यही बड़ी बात है"

अपने एक सेवक की यह दुर्दशा देखकर गुरू महाराज बड़े दुखी हुए और ऐसा प्रकाश करने के लिए मजबूर हो गए कि ऐसे असभ्य और अनघड़ जन को हम अपने साथ सैर को कैसे ले जा सकते हैं? श्रीमान गण्डा सिंह जी पर गुरू महाराज के दुख का तो पता नहीं कितना असर हुआ, पर वह उसी समय भागकर गए और अपने माता जी के चरणों में प्रणाम करने के लिए मजबूर हो गए।

अब यदि सेवक होकर, सुबह उठकर अपने बड़ों वा माता-पिता के चरणों में प्रणाम नहीं करते (या उनकी फोटो को प्रणाम नही करते) तो हमें पता लगे या न लगे हम देवात्मा के सन्तापक बनते हैं।

हमारी सेवकों की प्रतिज्ञा में सभाओं में जाना, संगत में जाना, उत्सवों और महोत्सव पर पहुंचना आवश्यक है। हम अपने सुख-दायक काम काजों को मुख रखकर प्रायः सभाओं, सत्संगों उत्सवों वा महोत्सव पर जाना छोड़ देते हैं और अपने सुखों की तृप्ति में यह भूल जाते हैं कि हम देवात्मा को कितना सन्तप्त करते है।

हम पहले-पहले दूसरों से मोटे पाप, नशे, मासाहार, सिगरेट, बीड़ी, जुआ आदि छुड़वाते थे, मिथ्या के विषय में दूसरों में जाग्रति पैदा करते थे, अब हमने यह संग्राम छोड़ दिया है या यह संग्राम कभी किया ही नहीं, ऐसा करके बेशक हम खुश रहें वा सन्तुष्ट रहें,

परन्तु देवात्मा गुरू के दोषी अवश्य बनते हैं क्योंकि हम अपने हित को बिसार देते हैं।

हम अपने परिवारिक जनों को और अन्य साथियों को हितकर पुस्तकें नहीं पहुंचाते, उच्च संगत में ले जाने का कोई यत्न नहीं करते, इसके लिए कोई खत पत्र नहीं लिखते, ऐसी हितकर क्रिया भूलकर हम देवात्मा के दुख का कारण बनते हैं।

गुरू महाराज एक बार मजबूर होकर यह फरमाने लगे, "गजब हो गया, सेवक होकर भी कोई निज का साधन नहीं करते।" साधन न करना, करने का संग्राम न करना, साधन की कभी अवश्यकता अनुभव न करना, देवात्मा के लिए दोषी बनना है। गुरू महाराज की फोटो को प्रणाम न करना, भजनों वा देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या न करना, देव प्रभावों के पाने के लिए प्रार्थना, उच्च लेखों का पाठ, थोड़ा बहुत न करना गुरू के दोषी बनना है। गुरू महाराज ने फरमाया है, सुबह 4 बजे न उठना पाप है, इसका कोई एहसास न रखना, उसके लिए यत्नशील न होना, गुरू महाराज का दोषी होना है।

सेवक होकर सेवा का कोई काम न करना, समाज की कोई सेवा न करके भी खुश रहना, केवल अपने ही परिवार के लिए जीना, अपने देवात्मा गुरू को दुखों के कांटे चुभोना है।

देवात्मा गुरू सेवा न करने वालों को जलता हुआ नहीं देख सकते थे, वह अपनी जेब से खर्च करके उन्हें संगत से वापिस भेज देते थे।

सेवा वा संगत न करने वालों वा छोड़ देने वालों से वह कोई निजी दान लेना स्वीकार नहीं करते थे, वह पौधों को सूखते देखकर बेबस हो जाते थे, यदि हम अपने रखे हुए पौधे सूखे रखते हैं, या धूप वा ठण्ड से उन्हें मरने देते हैं तो हम देवात्मा के दुख का कारण बनते हैं।

अपने उपकारियों को न देखकर, उनके लिए सेवाकारी होने के स्थान पर सताते हैं, उनकी निन्दा करते हैं या उनकी कोई हानि करते हैं, तो हम देवात्मा को घोर दुख पहुंचाते हैं।

अपनी समाज के गठन के अनुसार, अपने ज़िम्मे के कर्तव्य कर्मो को पूरा नहीं करते, अपने बुरे कर्मो को छुपाकर, अपनी प्रतिज्ञाएं भंग करके और फिर न बताकर, अपने आपको नीच बनाकर देवात्मा को तड़पाने का काम करते हैं।

समाज के उच्च त्यागी वा सेवाकारी जनों के साथ सम्मान वा सद्भाव-पूर्ण व्यवहार न रखकर, उनके सदगुणों के आगे न झुककर इसके विपरीत उन्हें सताकर, उन्हें हानि पहुंचाकर, उनकी निन्दा करके और उस पर कोई दुख अनुभव न करके हम अपने हाथों देवात्मा को "बेदावा" लिखकर देते हैं कि आप हमारे कुछ नहीं लगते।

समाज के आद्वतीय कारज, उसके गौरव की, उसके धन की, उसके नायाब देव प्रभावों से भरे वातावरण की, उसकी संस्थाओं की, उसकी सत्य वा शुभ मूलक मर्यादाओं की हानि करके, या हानि को देखकर, उसके लिए कोई दुखी न होकर, हम देवात्मा को दुखों की भठ्ठी में झोंकते हैं।

हम नीच जीवन धारी होकर, घंमडी, घृणाकारी, स्वार्थी, स्वेच्छाचारी और उनसे परिचालित होकर नीच गतियां करके देवात्मा को सताने का काम करते हैं। देवात्मा के दान की, उनके ग्रन्थों की, उनके ज्योति वा तेज की, उच्च हितकारियों वा उपकारियों की बेकदरी करके हम देवात्मा को सताने वाले बनते हैं।

नीच भावों की भयानक कैद से, विशेष कर घंमड, घृणा, ईर्षा, द्वेष, स्वार्थ, धन अनुराग, काम अनुराग से, मान, पद, प्रशंसा आदि के नीच अनुराग से मुक्ति प्राप्त करने के साधन न करके, हम देवात्मा को सताने का कारण बनते है।

धर्म भावों की प्राप्ति के, विशेष रूप से श्रद्धा,

कृतज्ञता, हानि परिशोध के, देवात्मा के प्रति विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता, वा आकर्षण के गहरे, सन्तोष जनक साधन, आत्म बोध वा उसकी प्राप्ति के साधन न करके हम देवात्मा की कुल कुर्बानियों, जां-अफसानियों पर पानी फेरकर महा हानिकारक सिद्ध होते हैं, इस प्रकार बहुत घृणित रूप से उन्हें सताकर उनके दोषी बनते हैं।

मनुष्य होना वा हानिकारक बनना एक ही बात है, इसलिए मनुष्य को इस पक्ष में सुचेत वा जाग्रित रहना अवश्यक है। बहुत ही शोक वा दुख का विषय है कि देवात्मा को घोर दुख पहुंचाकर भी हम सन्तुष्ट रहते हैं।

देवात्मा के प्रति दोषी होने का सच्चा वा मुबारक एहसास जो श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को हुआ था, वही एहसास हमारे जीवन में होना चाहिए। केवल उन्होंने वर्षो "सत्गुरू तुमरा मैं अपराधी" तुम्हें मैंने सताया है"का राग अलापकर, प्रतिदिन वर्षो देवालय के सामने 4 बजे खड़े होकर अपने मुंह पर चपतें लगा लगाकर, पत्थर मारे जाने के योग्य होने की पुकार मचाकर, अपना मुंह काला करके फटकारे जाने की सजा मांग मांगकर, किस प्रकार गुरू को दुख देकर दोषी होने के कलंक को धोया है, वही मार्ग उन्होंने हमारे लिए भी रोशन किया है। काश। हम अधिक से अधिक उक्त मार्ग अपनाकर अपना जीवन समय रहते-रहते सार्थक बना सकें।

(बलदेव सिंह)

पारिस्परिक सम्मान

यदि पति-पत्नी माता-पिता के रूप में एक शांतिमय और गौरवपूर्ण घर बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक पति को अपनी पत्नी को और प्रत्येक पत्नी को अपने पति को अपने दैनिक व्यावहारिक जीवन में सम्मान देना चाहिए।

विवाह का सम्बन्ध एक बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है, और क्योंकि विवाहित जोड़े को सदा एक-दूसरे के साथ रहना तथा एक दूसरे के लिए जीना होता है, इस लिए इस घनिष्ठ मेल-जोल में एक दूसरे को घृणा करने का डर बना रहता है। विवाह के कुछ समय बाद प्राय: वे एक दूसरे को कटु वचन भी कहते हैं और धैर्यहीन पति क्रोध में आकर अपनी पत्नियों को मार भी बैठते हैं। पति पत्नी में इस प्रकार कटु-वचनों का प्रयोग तथा मार-पीट से बढ़कर जीवन में और कोई बड़ी भूल नहीं हो सकती।

एक बार मैं अपने घर से रेलवे स्टेशन को जा रहा था कि मार्ग में एक गली में बड़ा भीषण दृश्य देखने में आया। दो नवयुवक एक बूढ़े को मार रहे थे। मैं भागकर वहाँ पहुंचा और मेरे रोंगटे खड़े हो गए जब मुझे यह पता चला कि उन नवयुवकों के द्वारा धरती पर गिराया हुआ वह बूढ़ा उनका अपना बाप था। मुझे देखकर उन युवकों ने अपने पिता को छोड़ दिया और मैंने उसे उठाकर खड़ा किया। मैं उसी गली में उसके घर गया और उसकी पत्नी से मिला। मैंने उस औरत से पूछा, "यह झगड़ा किस कारण हुआ? क्या तुम्हें मालूम था कि तुम्हारे पति को तुम्हारे ही बेटे मार रहे थे?" उसने उत्तर में कहा, "जो कुछ हुआ, उसका मुझे खेद है। लेकिन आप जानते हैं कि बेटा अपने बाप द्वारा भी, माँ को पिटती नहीं देख सकता। मेरा पति किसी घरेलू कारण से मुझसे नाराज था। मेरे विरोध करने पर उसने मुझे ज़ोर से ठोकर मार दी। मेरे बेटे यह बरदाश्त नहीं कर सके और बाप-बेटों का यह

झगड़ा मुझे लगाई गई ठोकर के कारण ही खड़ा हुआ। क्योंकि मुझे गाड़ी पकड़नी थी, इसलिए मुझे वहां से जाना पड़ा। परन्तु अपने परन्तु अपने स्थान पर पहुँचने तक का सारा रास्ता बाप के बेटों द्वारा पिटने का यह दृश्य मुझे पीड़ित करता रहा। इस बात का मुझे भी बहुत दु:ख हुआ कि पति ने पत्नी को पीटा। और इतने पर भी मुझे बताया गया कि पति अपनी पत्नी के पीछे दीवाना था। हर समय अपनी पत्नी के निकट रहने की इच्छा से ही उसने नौकरी छोड़ दी थी। सम्भवत: यह उससे प्रेम करता होगा, परन्तु मुझे विश्वास है कि उसका आदर तो नहीं करता था।

कई वर्ष बाद एक उच्च अधिकारी ने मुझसे नीति - शिक्षा के सम्बन्ध में, जो मैं कालेज में दिया करता हूँ, स्पष्ट कहा, "लड़कियों को अपने पति से प्रेम करना बताना चाहिएए लेकिन उससे भी अधिक पति का सम्मान करना सिखाना आवश्यक है। एक दूसरे को सम्मान की दृष्टि से देखने से वे एक - दूसरे को कठोर और अपमानजनक शब्द न कहेंगे और आपस में मार - पीट तो उनके लिए निश्चय ही असम्भव हो जाएगी। मैं हमेशा अपनी पत्नी से यही कहता हूँए मुझे प्रेम भले कम करो, सम्मान अधिक दो।"

मुझे एक शिक्षाप्रद घटना का निजी अनुभव है। एक बहुत पढ़ा - लिखा पति जो अपनी पत्नी को चाहता तो खूब थाए परन्तु उसका आदर कम करता था, एक बार ऑफिस जाने से पूर्व उससे नाराज हो गया। उसने अपमान - जनक भाषा का प्रयोग किया जिससे उसकी औरत की आँखों में आँसू आ गये। उसके पाँच वर्ष के बालक ने इस खेदपूर्ण झगड़े को देखा और चिन्तापूर्वक अपनी माँ को आँसू पोंछते देखता रहा।

पति ऑफिस से लौटा। जब भी वह घर लौटता, सबसे पहले बालक को गोद में लेकर चूमता। उस दिन भी वह बालक को गले लगाने लगा। बच्चा चिल्लाया "मुझे मत छुओं" तुमने मेरी माँ को डाँटा है और वह रोई है। मैं तुम्हारे पास नहीं आता।

उस बालक के पिता ने मुझे बताया कि किसी महात्मा के उपदेशों से भी शायद उस पर इतना प्रभाव न पड़ताए जितना उस भोले बालक के निर्दोष शब्दों से पड़ा। उस दिन से मैं अपनी पत्नी से कभी कठोर वचन नहीं बोला। तब से मुझे इस आदेश 'अपने साथी को प्यार भले कम करो, सम्मान अधिक दो, का वास्तविक मूल्य समझ पड़ा।

विवाहित जीवन की बहुत - सी दुर्घटनाएँ इसलिए होती है कि पति - पत्नी यह समझते हैं कि विवाह में केवल प्रेम ही चाहिए, चाहे परस्पर सम्मान हो या न हो।

कुछ जोड़े तो यह मानते हैं कि गृहस्थी में केवल प्रेम ही ज़रूरी है। पारस्परिक सम्मान को तो वह बनावटी और स्नेहरहित कहते हैं। मैं उनसे सहमत नही। पारस्परिक सम्मान प्रेम का विरोध भाव नहीं हैं। बल्कि इससे तो प्रेम शुद्ध और मजबूत बनता है।

मुझे एक छात्रा की घटना याद है, जिसे उसकी माता मेरे कालेज में दाखिल करवाने आई थी। यह कोई साधारण बात न थी। परन्तु मुझे हैरानी तब हुई जब कुछ दिन पश्चात मुझे उस लड़की को बी. ए. कर लेने के लिए प्रेरित करूँ, और वह लड़की की शिक्षा के प्रति अपनी गहरी रूचि दिखलाने के हेतु उसके नाम पर इदस हजार रूपया जमा करवाने को भी तैयार था।

मैंने लड़की को बुलाया और वह पत्र उसे पढ़ने को दे दिया। वह चिल्ला उठी," मैं उनके धन की एक पाई भी नहीं छूना चाहती। मैं अपनी

माता के आश्रय में रहती हूँ, और उनकी आश्रित बनी रहूँगी। मेरे माता और पिता एक दूसरे से जुदा रहते हैं और मैंने अपना चुनाव कर लिया है। मैं माँ के साथ रहूँगी।"

एकाएक लड़की द्वारा अपने पिता का तिरस्कार देखकर मैं हैरान रह गया। उन दोनों में भी झगड़े का कारण पत्नी के प्रति पति सम्मान का अभाव था।

एक दिन, एक बड़ा शिक्षक मुझे मिलने आया। वह एक युवक के सम्बन्ध में मेरे पास आया था। वह युवक एक स्कूल का हैडमास्टर था और हमारे कॉलेज में पढ़ाता भी था। शिक्षक ने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उस युवक के दूसरे विवाह का विरोध न करूँ। "मैं दो विवाह की अनुमति क्यों कर दे सकता हूँ?" मैंने उस शिक्षक को उत्तर दिया।

उस पर जो कथा मुझे बताई गई वह मेरे प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित है। वह युवक जितना अधिक शिक्षित था, उतना ही सुन्दर भी था। उसका विवाह भी एक सुन्दर कन्या से हुआ था। अपने परिस्परिक सम्बन्ध में मेल-जोल स्थापित करने से पूर्व ही एक दिन वे आपस में झगड़ पड़े और एक-दूसरे को कठोर वचन कहने लगे। पति यौवन के नशे में धीरज खो बैठा और उसने पत्नी के मुँह पर एक जोर का थप्पड़ मार दिया। पत्नी अपमान से चिल्ला उठी और हमेशा के लिए उसका घर छोड़कर चली गयी। पति ने कई बार क्षमा माँगी। मित्रों ने लड़की को समझाया और दम्पति के जीवन में मेल स्थापित करने की कोशिश की।

कथा की समाप्ति पर वह शिक्षक बोला, "अब इस युवक का क्या दोष? वह उसे बहुत चाहता है, परन्तु लड़की कहती है कि उसके अपमान का अब कोई इलाज नहीं।"

यह पति की घटना है। ऐसे क्रोधी प्राणी कम ही होते है, परन्तु होते जरूर हैं। प्रत्येक पति-पत्नी का कर्त्तव्य है कि वे पारस्परिक प्रेम के साथ परस्पर सम्मान भी करें।

युवा-जोड़ों के प्रति मेरा यह सर्वथा संकेत है कि जब वे माता-पिता बनते हैं तो एक दूसरे के प्रति उनका व्यवहार सम्मानपूर्ण होना चाहिए। मैंने ऐसे कई दुखान्त दृश्य देखे हैं, जहाँ माता-पिता के पारस्परिक असम्मान ने बच्चों के जीवन को अंधकारमय बना दिया। मैं एक ऐसे परिवार को जानता हूँ कि जहाँ पति-पत्नी ने केवल मतभेद के कारण अपने घर को उजाड़ दिया। उनके दो बेटे थे। एक पुत्र जो माता-पिता के साथ रहता था, पिता का प्यार भी पाना चाहता था। वह अपने पिता के पास गया ताकि अपने माता-पिता में शान्ति और मेल करवा सके। पिता उससे रूखेपन से पेश आया और कहते हैं कि उसकी माँ के सम्बन्ध में बुरा-भला भी कहा। लड़के को बड़ा दुःख हुआ और वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठा। बहुत देर तक वह मानसिक चिकित्सालय में रहा। माता के दुःख का अनुमान ही किया जा सकता है। उसने दीनतापूर्वक अपने पिता से प्रार्थना की कि आपस में अनमेल को समाप्त कर दें और बच्चों को एक शान्त और सुखी घर प्रदान करें परन्तु पति न पिघला और उनका घर बरबाद हो गया। जहाँ तक मैं उस स्थिति को पहचान सका, मेरा विश्वास है कि वह सब परिस्परिक सम्मान के अभाव के ही कारण था। परिणाम यह हुआ कि वे दोनों सदा के लिए एक-दूसरे से जुदा हो गए और बच्चों का जीवन बरबाद हुआ। माता-पिता से मेरी प्रार्थना है कि अपने बच्चों और सुखी गृहस्थ की नींव के लिए अपने सम्बन्धों में पारस्परिक सम्मान को बनाएँ।

(पी. वी. कनल)

महोत्सव पर पब्लिक लैक्चर

16 दिसम्बर सन 2005 का परम पूज्नीय भगवान देवात्मा के 156 वां वार्षिक जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में शाम को 4 बजे एक पब्लिक लैक्चर आयोजित किया गया जिसका विषय था, "आत्मा के क्षेत्र में नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधान तथा उनसे हमारे जीवनों को अमुल्य लाभ।" श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने इस लैकचर की अध्यक्षता की थी। श्रीमान डा. विनोद खेड़ा ने यह लैक्चर दिया जिसका सारांश धर्म जीवन के पाठकों के लाभ हेतु नीचे दिया जाता है।

श्रीमान जी ने अपने लैकचर का आरम्भ अमेरिका के एक अग्रणी Spiritulist डा. Wayne W.Dyre के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण Experience से किया। उन्होने बताया कि इस महान व्यक्ति का बचपन बेहद दुखदाई था इनके पिता अत्यधिक शराबी थे और जब इनकी माता इन्हें जन्म के बाद हस्पताल से लेकर घर आई तो इनके पिता को घर से नदारद पाया। इनकी माता जी और नानी के जेवर चुराकर और इसके दो साल के भाई David को बहुत बीमार हालत में उसके 3½ साल के भाई के हवाले छोड़ कर उनके पिता, इनकी माता और इन्हे छोड़ कर एक और स्त्री के साथ रहने चले गये और उसके बाद इनकी माता ने इन्हे बताया कि इस व्यक्ति ने केवल उनके साथ ही ऐसा नहीं किया अपितु पांच स्त्रियों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया। इनके पिता ने कभी भी अपने परिवार के पालन के लिए एक पैसा तक नहीं खर्चा। डा. Dyre और इनके भाई सालों तक अनाथालय और Foster Homes के अन्दर रुलते रहे और डाक्टर Dyre के अन्दर अपने ऐसे पिता के प्रति बेहद नीच घृणा और द्वेश भाव जाग्रत हो गया और बड़े होकर वे सपनों में अपने ऐसे पिता को ढूंढ़ते रहे और स्पप्न-स्पप्न में उन्हे मुक्के, घूसे और लाते मारतें और अपनी सारी भड़ास उनपर निकालते रहे। दुर्भाग्य से इनकी माता ने फिर एक वैसे ही व्यक्ति के साथ विवाह कर लिया जो इनके पहले पिता की तरह नशे में धुत रहा करते थे और उनके इस पिता ने भी अपने परिवार पर एक पैसा तक खर्च नहीं किया।

Wayne Dyre को अपने पिता के प्रति अपना गुस्सा कड़वाहट और नीच घृणा व्यक्त करने का अवसर मिला अपने पिता की मृत्यु के बाद उनकी कबर पर जाकर। इस घटना से पहले वे खुद भी बहुत अधिक शराब पीने लग गये थे, बहुत अधिक ऊट पटांग खाकर अत्यधिक मोटे होते जाते थे और अपने लिए सही पत्नी चुनने में भी बार-बार विफल हो रहे थे। अपने भीतर से अपनी नीच घृणा की मैल निकाल लेने के पश्चात इनकी अवस्था में एस आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन आया। उनकी शराब छूट गयी। ऊटपटांग खाना बंद हो गया। प्रतिदिन व्यायाम व लंबी सैर आरम्भ हो गई और एक सुयोग्य स्त्री के साथ उनका विवाह भी हो गया। उन्होंने इस उच्च परिवर्तन का श्रेय नेचर की उच्चतर शक्तियों को दिया।

मनुष्य का एक-एक नीच भाव उसे किस प्रकार कमज़ोर, बेकार और निक्म्मा बना देता है और उससे मुक्त हो जाने से मनुष्य किस प्रकार बलवान, सुहृदय तथा अपने और औरों के लिए लाभदायक बन जाता है, इसे जानना मनुष्य के लिए बहुत मूल्यवान आवश्यकता है। University of California los angles, USA की एक विख्यात वैज्ञानिक ने The Open Mind Field Concept (अपना दिमाग खुला रखने की विचारधारा) खोजी है। इस विचारधारा के अनुसार इस

ब्राहमण्ड में उच्च विचार अब तक खोजे गये सभी उच्च विचार ऊंची Frequency (बारम्बारता) के साथ विद्यमान है। डा.Hunt के अनुसंधान के अनुसार हम विश्व में विद्यमान उन सभी महत्वपूर्ण उच्च विचारों से अपने जीवनों में लाभ उठा सकते हैं जिनके साथ हम अपना संपर्क बना लें इसी प्रकार की उच्च विचार धाराओं से संपर्क बनाने से वही Dr Wayne dyre अपने पिता को सबसे खराब और बड़ा शत्रु मानते और जानते थे और अपना जीवन बरबाद कर रहे थे और उनकी अवस्था यहां तक पहुंच चुकी थी कि वह दिल की बीमारी से मरने के कगार पर पहुँचे हुए थे। वही डा. Dyre अब ऊंची fraquency के उच्च निचारों के संपर्क में आकर अपने आप से यह प्रश्न करते है: "मेरा सबसे बड़ा teacher कौन है? मुझे अपने जीवन में सबसे अधिक किसने प्रेरित किया? वे इस प्रश्न का एक बहुत आश्चर्यजनक उत्तर देते हैं: मेरे उसी पिता ने जिनसे मैं अत्यधिक नफरत करता था। श्रीमान डा. खेड़ा ने अपनी अनेक कमियों का वर्णन करते हुए बताया कि किस प्रकार भगवान देवात्मा की highest frequency वाले देव प्रभावों के साथ थोड़ी देर के लिए भी संपर्क बना तब - तब उन्हें अपनी इन कमियों का एहसास भी हुआ और अपनी इन कमियों से बचने के लिए शक्ति भी मिली। ऐसे संपर्क बनाने के लिए मनुष्य को अपना दिमाग खुला रखना नितांत आवश्यक है।

Toronto के Dr. Tom Verny ने मां के पेट में पल रहे बच्चों के विषय में यह अनुसंधान किया है कि मां के पेट में तीन महीने के बच्चे में सोच, समझ महसूस करने और याद रखने की शक्ति पैदा हो जाती है जब कि उसका दिमाग अभी पूरी तरह से बना नहीं होगा। इस अनुसन्धान से यह स्पष्ट हो जाता है कि सोच, समझ और याद रखने की शक्तियां भौतिक दिमाग पर निर्भर नहीं करती बल्कि बच्चे की उस आत्मा पर निर्भर करती है जो मां के पेट में उसके शरीर का निर्माण कर रहा होता है।

Arizona, USA के Dr. David Hawkins ने 29 वर्ष के अपने अनुसंधान के बाद खोज निकाली है कि मनुष्य के उच्च या नीच भावों के साथ एक विशेष प्रकार की frquency है। उच्च विचारों के साथ अधिक Frequency और नीच विचारों के साथ कम frequency। यह अनुसंधान उन्होंने हजारों Randomly selected लोगो पर लाखों प्रयोग करने के बाद किया। डा. खेड़ा ने उपस्थित जनों के समक्ष प्रयोग करके दिखाया कि किस प्रकार उपस्थित जनों में से ही किसी व्यक्ति के बुरे विचार मांसपेशियों की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं और किस प्रकार उसी व्यक्ति के उच्चे प्रभाव उस व्यक्ति की मांसपेशियों को बलवान बना देते है। कोका कोला की एक बोतल को उपस्थित विद्यार्थी के Solar plexus पर दवाब देकर रखने से किस प्रकार वह विद्यार्थी बहुत कमज़ोर पड़ गया इस प्रयोग का बहुत शिक्षाप्रद और जोरदार प्रभाव उपस्थित जनों पर पड़ा। उन्होंने अनुभव किया कि Coca-Cola पीये बिना भी Coca-Cola की बोतल से निकले प्रभाव भी एक - एक मनुष्य को कमज़ोर कर देते है।

यही प्रयोग यदि एक शराब की बोतल के साथ भी किया जाए तो भी वही परिणाम निकलेगा। यदि किसी कुत्ते के खाने में भी शराब डाल दी जाये तो कुत्ता उस खाने को नहीं खायेगा परन्तु हाय। ऐ मनुष्य तेरी कहानी तो कुत्ते से भी दर्दनाक बनती जा रही है। उन्होने उपस्थित जनों में से किसी ऐसे जन से प्रश्न किया जो पहले शराब पिया करता था, "आपने जब पहली - पहली बार शराब चखी थी तो क्या हुआ था?" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि उसे शराब बहुत ही खराब लगी थी और उल्टी करने को दिल करता था इससे यह साफ जाहिर होता है कि कोई भी व्यक्ति

जब पहली बार शराब चखता है तो उसके शरीर और आत्मा उसे स्वीकार नहीं करते परन्तु धीरे - धीरे नशे का गुलाम बनकर वही व्यक्ति अपने आप को और इर्द गिर्द दूसरों को तबाह करने का कारण बन जाता है। डा. खेड़ा ने कहा कि हम बच्चों को बताते हैं कि शराब एक जहर है, एक Poison है। परन्तु एक बड़ी आयु का इन्सान जो अपने आप को mature समझता है वो अपने आप को बच्चों से कही अधिक immature साबित करता है। उन्होने उपस्थित जनों से पूछा कि क्या शराब पीने वाले लोग maturity का परिचय देते है उनसे तो कहीं अधिक mature होते है बच्चे और जानवर। क्योंकि वह अपने पेट में जहर नहीं डालते क्योंकि एक बूंद भी शराब की डाल दो तो वह थूकते हैं और उल्टीयां करते हैं।

इस की प्रभाव Hawkins द्वारा की गई खोज को सभी उपस्थित जनों के समक्ष प्रयोगिक ढंग से प्रमाणित किया गया। आगे चलकर श्रीमान विनोद खेड़ा जी ने एक अहं अनुराग के अधिकार में होने के दो World Record Holder धावकों का औलंपिक दौड़ों की प्रतिस्पर्धा में हार जाने का उदाहरण दिया Moris Green 100 मीटर की दौड़ में और Michal Johnson 400 मीटर की दौड़ में world record holders थे। दोनों अपने आप को एक दूसरे से बहुत बढ़िया समझते थे तथा इस बात की डींगे मारा करते थे। दोनो Television पर यह Claim किया करते थे। कि मैं दुनियां का सबसे तेज धावक हूँ। डा. खेड़ा ने बताया कि दोनो को विश्व olympic games की तैयारी में 200 मीटर की दौड़ में एक दूसरे के विरूद्ध दौड़ना पड़ा। दुनिया के सबसे तेज दोनों ही धावक उस प्रतिस्पर्धा में हार गये। दोनो की frequency (बारम्बारता) को नापा गया और वह कम पाई गई। उनके अहं और एक दूसरे के प्रति दुश्मनी की feelings के परिणाम स्वरूप मिली हार ने डा. हेविन्स की खोज़ को सच्चा साबित कर दिया।

डा. खेड़ा ने आगे चलकर उस वैज्ञानिक अनुसंधान का वर्णन किया जिसके अंर्तगत यह पाया गया है कि बुरे भावों से परिचालित होकर हम अपने Energy field (शक्ति के क्षेत्र) को कमजोर करते जाते हैं। अपने जीवन में हम किन चीज़ों को अधिक महत्व देते हैं और किन्तु कम। यह हमारे जीवन की भाव शक्तियों द्वारा ही निधारित होता है। हमारे भीतर के उच्च भाव हमें सही प्राथमिकताएं निधारित करने में सहायक होते हैं जिससे हमारा Energy field मजबूत हो जाता है। श्रीमान डा. विनोद खेड़ा ने एक ऐसे जीवन में अनोखे उच्च परिवर्तन की गाथा सुनाई जिसको याद करके मानवता सदियों तक याद करके गर्व से भरती रहेगी। श्रीमान डा. हरनाम सिंह जी जो अब से लगभग 130 वर्ष पूर्व फिरोज़पुर में पैदा हुए थे एक बहुत ही सुन्दर शरीर, शानदार दिमाग और बहुत सी अन्य योग्यताओं के मालिक थे। इस बच्चे को बचपन में ही अत्यन्त गंदे शिक्षकों और विद्यार्थीयों की बुरी संगत नसीब हो गई। इनकी सभी शानदार योग्यतांए इन्हे कुसंगत के कारण बरबाद करने में लगने लगी। इनकी हालत बद से बदतर होती चली गई। यहां तक कि इन्हें पूरे स्कूल के अध्यापकों व विद्यार्थीयों के सामने खड़ा करके बहुत शर्मिंदा किया गया तथा स्कूल से निकाल दिया गया। इस शर्मिंदगी की हालत में वह आत्म हत्या करने के इरादे से अपने घर से निकल गये। परन्तु सौभाग्य वश पकड़े गये और बचा लिए गए। उनके माता - पिता उनकी इस बुरी अवस्था से बहुत परेशान थे। ऐसे में बिगड़े हुए बच्चे को लाहौर जैसे बड़े शहर में Medical शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेज दिया गया। जहां उन्हें और भी गन्दी और बिगड़ने वाली संगत मिल गई। लाहौर में आकर यह राग रंग की महफिलों के प्यारे, Theatre के दिल - दादा और अत्यन्त आवारागर्द बन गये। यहां तक कि घर से मिले

जेब खर्च को तो अपनी बुरी आदतों पर बरबाद करते ही थे, अपने कपड़े और कभी अपनी घड़ी इत्यादि सामान गिरवी रख कर Theatre की टिकटें खरीदतें थे। जब गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं होता था तो यह Theatre के गिर्द चक्कर काट कर अपनी रातें गुजार देते थे। कविताएं बनाने की अच्छी योग्यता का भी यह दुरोपयोग करते थे। गन्दे गीत और शेयर लिखकर स्कूल के दरवाज़े पर चिपका दिया करते थे। इनके बहुत ही बड़े सौभाग्य कि इन्हे 1896 ई० में देव समाज के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित होने का अवसर मिला और उनके जीवन का कांटा बदल गया। परम पूज्नीय भगवान देवात्मा के Higher frequency वाले भावों के साथ उनके हृदय का मेल हो गया और उनके जीवन में आरम्भ हुआ एक नया युग। धीरे - धीरे सभी बुराईयों का त्याग कर वे अच्छे स्वास्थ वाले, प्रतिदिन निष्काम सेवा करने वाले व्यक्ति बन गये। Medical college की परीक्षाओं में पहले वर्ष (जब कि वह अत्यन्त बुरा जीवन रखते थे) वह नकलें करने के बावजूद वह अपनी कक्षा में 25 वें स्थान पर रहे थे। देव प्रभावदायक अति उच्च संगत में आने के बाद उनका स्थान 5 वां हो गया, बिना अनुचित साधन अपनाये। तीसरे वर्ष में दूसरा स्थान और चौथे वर्ष में पहला स्थान। दूसरे स्थान पर आने वाले बहुत तीव्र बुद्धि वाले विद्यार्थी से उनका बहुत बड़ा अन्तर था। उन्होने सर्जरी में स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। उन्होने परम पूज्नीय भगवान देवात्मा की वर्तमानता में अपना बनाया हुआ वह गीत गाया।

हमारे पूज्यनीय सतगुरू तुम हो धन्य.....

जब वह इस गीत के भीतर के यह शब्द हृदय के गहरे भावों से गा रहे थे,

बहुत उजड़े बसाए तुम,

बहुत डूबे बचाए तुम"

तो वहां उपस्थित न केवल सभी जन अपितु भगवान देवात्मा भी बरबस फूट पड़े। सबकी आखों से आंसू छलक पड़े और एक अद्भभुत समय बंध हो गया। वही बेहद रद्दी हरनाम सिंह परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा से यह "फरिश्ते" का Certificate लेने के योग्य बन गये और इसके बाद उन्होने हैजे की महामारी में देव समाज मोगा में विद्यार्थीयों और अध्यापकों की जान बचाते हुए अपना जीवन बलिदान करके मानवता के इतिहास में एक सुनहरी पृष्ठ जोड़ दिया।

श्रीमान डा. खेड़ा ने आगे चलकर एक अनोखे engineer, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जीवन में भगवान देवात्मा के देव energy field (देव शक्ति के क्षेत्र) के प्रभावों द्वारा आये अति उच्च जीवन परिवर्तन की संक्षिप्त जीवन गाथा सुनाई। वही श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जो भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले अपने विषय में कहते थे, कि "ऐसा कोई पाप नहीं जिसे करने का मुझे मौका मिला हो और मैंने उसे न किया हो" वही परम पूज्नीय भगवान देवात्मा की शरण में आकर इस योग्य बन गये कि उनके संपर्क में आने वाले सैकड़ों मनुष्यों ने अपने महापाप छोड़ने का अति सुन्दर अवसर पाया। महाराजा पटियाला और महाराजा नाभा के सांन्डू श्रीमान हरनाम सिंह जी के जीवन की गाथा सुनाते हुए वक्ता ने बताया कि वह भगवान देवात्मा के अद्धितीय देव प्रभावों के energy field में आने से पहले किस प्रकार अत्यन्त गया मुजरा आँर घिनौना जीवन व्यतीत करते थे। अपने घर में शराब निकालना, पीना और पिलाना, शिकार करना और मासाहार इत्यादि उनके जीवन का एक बहुत हानिकारक अंग बन चुके थे। पशुओं को मारते - मारते और खाते - खाते वह इतने निर्दयी बन गये थे कि उनके घर में पैदा होने वाली हर लड़की को पैदा होने के साथ ही मार दिया जाता था। हाय! कैसा नारकीय दृश्य! इन्ही सरदार जी को उपरोक्त श्रीमान देवत्व सिंह जी के द्वारा परम पूज्नीय भगवान देवात्मा

के प्रभावों को पाने का सुअवसर मिला और उनके जीवन में एक आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन आया। उनका जीवन चरित्र भी पढ़ने और जानने योग्य है।

इसके उपरान्त रायपुर रानी के एक विशिष्ट पुरोहित खानदान के एक ऐसे बालक का वर्णन किया गया जिसका नाम गोबिन्द राम था यह भी बचपन में ही साथी विद्यार्थीयों की खराब संगत के कारण बरबादी के रास्ते पर चले पड़े थे। उन्हें भगवान देवात्मा का लौहार में एक उपदेश सुनने का अवसर मिला। उसी एक उपदेश से उनके जीवन में आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन आया। रायपुर रानी वापिस आने के बाद उन्होने अपने इस परिवर्तन के विषय में इस प्रकार लिखा है, "लेकिन यहां आकर क्या देखता हूँ कि वह दिल जो कि अपनी तबाही के समानों की ओर वैसे ही जाता है कि जैसे सुअर गंदगी की ओर, और दीया पंतगे की ओर, और जिसे लोक लाज, मानसिक शिक्षा, धार्मिक विश्वास आदि - आदि उस ओर से हटाने में बिलकुल असफल प्रमाणित हुए थे अब उस ओर जाने में दुख और घृणा मालूम करने लगा और उसकी बेतहाशा विनाशकारी गति में मोड़ पड़ गया।"

अंत में वक्ता ने यह बात स्पष्ट की कि किस प्रकार "Open mind field concept" के साथ भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के साथ open mind के साथ संबंध बनाकर उनके अनगिनत शिष्यों के जीवनों में अत्यन्त विस्मयजनक उच्च परिवर्तन आये हैं और भगवान देवात्मा के देव energy field की अद्धितीय करामातों का यह सब उच्च परिवर्तन दायक प्रमाण है।

वक्तव्य के अंत में सभापति श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने इतने गंभीर व कठिन विषय को इतने सरल ढंग से प्रस्तुत करने के लिए वक्ता का धन्यवाद किया और परम पूज्नीय भगवान देवात्मा की विशेष कृपा को व्यक्त किया।

लैकचर समाप्त हो जाने के बाद श्रीमान स्वामी गोबिन्द राम जी के परिवार की ओर से उनकी पौत्र वधु श्रीमति सरला शर्मा जी ने उनके पहली बार हिन्दी में छपे जीवन चरित्र, "हमें जिन पर नाज है" का विमोचन किया। यह पुस्तक भगवान देवात्मा मैमोरियल फाऊडेशन, मकान नं. 3104, सैक्टर - 35 - डी, चण्डीगढ़ द्वारा जन साधारण के लाभ के लिए मुक्त वितरण हेतु उपलब्ध है।

टैगोर थियेटर में माता - पिता दिवस

हर साल की तरह इस नये वर्ष का स्वागत डा. खेड़ा के चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर ने बड़े ही स्नेह भरे अंदाज में किया और वो था हमारा वार्षिक उत्सव - 'माता - पिता संतान दिवस'। उत्सव के नाम से ही आम जनता हैरान हो जाती है पर आज की भागती - दौड़ती दुनियां में नैतिक मूल्यों के पतन और संबंधों के अन्मेल को देखते हुए यह उत्सव हम सब में जागृति और self analysis/introspection पैदा करने की एक छोटी सा परन्तु बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रयास है। माता - पिता और संतान के रिश्ते की गरिमा, उसकी मर्यादा और एक दूसरे की भावनाओं को समझना: माता - पिता की कुर्बानियों की कद्र करना - ये सब अलग - अलग गीतों भजनों, कविताओं और नाटक के ज़रिये दर्शाया गया।

उत्सव की शुरूआत में डा. विनोद खेड़ा जी ने मुख्य अतिथि डा. दलजीत सिंह और अन्य अतिथि गण, विद्यार्थीयों और शिक्षकों का स्वागत किया। उन्होंने हमें इस प्रोग्राम का लाभ उठाने कि लिये प्रेरित किया।

उन्होंने उन बच्चों की हौसला - अफज़ाई की जिन्होंने अपने पढ़ाई के कड़े मेहनत भरे schedule में से समय निकाल कर बड़ी लगन से प्रोग्राम तैयार किया।

प्रोग्राम में सबसे पहले कोचिंग सेंटर के छात्र और छात्राओं ने बहुत ही सुंदर भावनाओं से ओत - प्रोत गीत प्रस्तुत किया "माता - पिता की सेवा दिल से किया करेंगे"।

इसके बाद देव धर्म मिशन के सेक्रेटरी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने हमें अपने विचारों से बेहद प्रभावित किया। उन्होंने आज के युग की संतान का अपनी माता - पिता के साथ प्रेम और सद्भावना भरा व्यवहार न रखने की तुलना पशुवृति से की। जिस तरह पशुओं के बच्चे अपनी जरूरतें पूरी करने के बाद माँ - बाप और भाई बहन से कोई रिश्ता नहीं रखते आज इन्सान में भी यह प्रवृति बहुत जोर पकड़ चुकी है। उन्होंने इंसानों के "अंधेपन" पर भी हमारा ध्यान आकर्षित किया। 98% इंसान "अंधे" हैं - वे दूसरों की मदद और दूसरों के दर्द को नहीं देख सकते। इन दूसरों में माँ - बाप भी शामिल है।

श्रीमान जी ने माँ - बाप की कुर्बानिओं पर रोशनी डालने के लिये कई ऐतिहासिक उदाहरण भी दिये।

(आज के युग में श्रवण कुमार नहीं मिल सकते हैं पर उनकी छवि श्रीमान बलदेव सिंह जी में नज़र आती है। कम आयु में विधवा माँ के साथ इन्होंने अच्छा व्यवहार नहीं किया परन्तु भगवान देवात्मा की शरण में आने के बाद इनके जीवन में बेहद परिवर्तन आया और इन्होंने अपनी माता की जी - जान से सेवा की। पिछले 40 सालों से औरों की बुराइयों, पापों और संबंधो में अनमेल को दूर करने में तत्पर हैं।)

श्रीमान जी ने माता - पिता के उपकारों को अनमोल बताया और कहा कि हम जिस तरह आसमान के तारों, बारिश की बूँदों और रेत के कणों की गणना नहीं कर सकते उसी तरह माँ - बाप की कुर्बानियों की भी गणना नहीं की जा सकती है।

इतने प्रभावशाली विचार इतने सरल ढंग से श्रीमान जी ने प्रस्तुत किये कि श्रोतागण मंत्र - मुग्ध सुनते रहे। बड़ा ही सुंदर समां बंध गया.....।

इसके बाद कोचिंग सेंटर के छात्र - छात्राओं ने बहुत ही स्नेह - श्रद्धा भाव से भरा गीत प्रस्तुत किया -

'माता - पिता की सेवा महसूस कर रही हूँ,
श्रद्धा के शुक्रिया के भावों से भर रही हूँ.....।

इस सुंदर गीत के बाद हमारे Compere अश्विनी ओहरी ने बाहरवी की विद्यार्थी कशिश दत्ता के पिता श्री सुनील दत्ता को Stage पर आमंत्रित किया। श्री दत्ता जी ने डा. खेड़ा को इस तरह के प्रोग्राम करने के लिये बधाई दी और वहाँ बैठे लोगों को डा. खेड़ा के एक छुपे हुए पहलु से अवगत कराया - डा. खेड़ा सिर्फ एक professional कोचिंग सेंटर नहीं चला रहे पर वो बच्चों के दुख - दर्द और कष्टों में उनके साथी, Guide, mentor और मार्ग दर्शक भी बनें है। श्री दत्ता ने कहा कि उनके जीवन पर डा. खेड़ा का बहुत ही positive influence रहा है और वो हमेशा डा. खेड़ा के ऋणी रहेंगे।

इसके बाद coaching centre के छात्र नीरज और chemistry के शिक्षक श्री अश्विनी ओहरी ने सपूत श्रवण कुमार के मन के भाव एक गीत के जरिये प्रस्तुत किये। गीत के बोल कुछ इस तरह थे।

'कांधे पर काँवर लेकर चला,
अब क्यूँ न करू मैं गुमान,
एक पलड़े में लक्ष्मी जी सोहे,
दूजे में हैं भगवान,
मेरे काँवर के भाग महान.....।

अलीशा सूद, हमारी बाहरवी की छात्रा ने एक

स्वंय रचित कविता से audience को मोहित कर दिया। माँ - बाप के प्रति आज की संतान का दुर्व्यवहार और बदले में माँ - बाप का निस्वार्थ प्यार और बलिदान उनकी कविता की एक - एक पंक्ति में झलकता था -

'माँ - बाप को जो प्यार करें वो लोग निराले होते हैं कुछ ऐसे ही भाव ग्याहरवीं की छात्रा ईशा शर्मा ने अंग्रेजी की कविता के जरिये रखे।

फिर डा. खेड़ा ने हमारे कुछ बेहद ज़हीन विद्यार्थीयों के द्वारा उनके माँ - बाप को सम्मानित किया। इनमे P.T.U में 2005 में प्रथम आये हरसिमरन सिंह ने अपने पिता सरदार जरनैल सिंह का अभिनंदन किया। कशिश दत्ता ने अपने पिता श्री सुनील दत्ता को सम्मानित किया। आकांक्षा बरनार्ड ने अपने माता - पिता की चरण घूली माथे पर लगाई।

रिम्पी और मीनाक्षी ने बहुत ही मार्मिक गीत से दर्शकों के मन को छू लिया। गीत के बोल कुछ इस तरह थे।

'माँ प्यारी माँ,

गोद में तेरी खेला बचपन.....।

फिर उत्सव का मुख्य आकर्षण था Dr Veneet Khera द्वारा dramatised और अश्विनी ओहरी द्वारा निर्देशित नाटक - 'एक ऐसी बिटिया जिसने इतिहास रचा'

ये जानने लायक बात है कि इस नाटक की तैयारी डेढ़ महीने से चल रही थी और जिस तरह से इसे पेश किया गया उससे साफ जाहिर था इसे तैयार करने में सिर्फ कई घंटे, कई दिन या कई हफ्ते ही नहीं बल्कि कई अच्छी भावनाएं भी लगी हुई थी। प्रस्कोविया नाम की रूसी लड़की के अपने माता - पिता के लिए किए गए त्याग पर आधारित यह नाटक उसकी अपने माँ - बाप के प्रति फर्ज़दारी, जिम्मेवारी और अतुलनीय कुर्बानी की दास्तान था। हर उस बच्चे ने जिसने इस नाटक में हिस्सा लिया उसका अभिनय काबिले तारीफ था। दरअसल ये अभिनय इतना real था क्योंकि बच्चों की सच्ची भावनाएं उन्हें प्रेरित कर रही थी। शायद ही audience में कोई रहा हो जो इस मार्मिक नाटक से भाव - विभोर न हुआ हो। इस नाटक के जरिये बच्चों ने हमें अपने जमीर को टटोलने पर मजबूर कर दिया - क्या हम अपने माँ - बाप को आज तक समझ पाये है? हममें से कितने हैं जिन्होंने कभी न कभी उनके साथ दुर्व्यवहार न किया हो? क्या हम कभी प्रस्कोविया जैसे बन पायेंगे?

इसके बाद आकांक्षा बरनार्ड और उनके पिता सम्मानीय पैस्टर (कालका चर्च) रेव. बरनार्ड और उनकी माता ने एक बहुत ही सुंदर युगल गीत प्रस्तुत किया -

"मात - पिता - हे प्यारी संतान हमारी, सदा तुम्हारा हो कल्याण।" आकांक्षा ने "श्रद्धा भाजन मात - पिता जी श्रद्धा भाव कँरू उपहार।" नामक गीत गाया।

प्रोग्राम के अंत में डा. खेड़ा ने हमें मुख्य अतिथि डा. दलजीत सिंह जी से मिलवाया और उनका अभिनंदन किया। डा. सिंह जी ने इस प्रोग्राम की बेहद सराहना की और श्री खेड़ा को इस तरह के प्रोग्राम आयोजित करने के लिए बधाई भी दी।

जिन बच्चों ने प्रोग्राम में Participate किया था उनको भी मुख्य अतिथि के हाथों डा. खेड़ा ने सम्मानित करवाया। नाटक के निर्देशक श्री अश्विनी ओहरी की भी बेहद सराहना करते हुए उन्हें भी डा. खेड़ा ने बच्चों के जरिये सम्मानित किया।

प्रोग्राम के बाद सभी अतिथियों, विद्यार्थियों एवं शिक्षक और अन्य staff members के लिये रात्रि भोज का भी टैगोर थियेटर में चंडीगढ़ कोचिंग सेंटर की तरफ से आयोजन था।

(एक हाजरीन)

रूड़की में सभाएं

रूड़की में, 32 सिविल लाईन में स्थित देव धर्म मिशन के स्थान में सभाओं का प्रोग्राम 25 नवम्बर 2005 से 28 नवम्बर तक रखा गया। यहां श्रीमान बलदेव सिंह जी मन्त्री देव धर्म के साथ श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान जगदीष प्रसाद जी, श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा - (यमुना नगर) पहुंचे। 25 की शाम 7 बजे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें शामिल होने के लिए त्यागी जी हरिद्वार से, श्री नवनीत जी का परिवार, श्रीमान अरूण जैन जी का परिवार, श्रीमान श्याम सुखनानी, उनकी धर्म पत्नी और उनके माता - पिता जी, श्रीमान अनिल गुप्ता जी, श्रीमति भंडारी जी, उनके पति श्री गुप्ता जी S.D.O. और कुछ अन्य जन पहुंचे।

सभापति जी ने हाजरीन से पूछा, धर्म क्या होता है? कंवर पाल सिंह जी वा वर्मा जी ने उसके अलग - अलग उत्तर दिए, फिर सभापति जी ने बताया कि धर्म उच्च, नेक वा आला बनने का नाम है। हमारे व्यवहारों के द्वारा पता लगता है कि हम उच्च हैं या नीच। उच्च व्यवहारों वाला व्यक्ति चाहे कोई धर्म न मानता हो, पूजा पाठ न करता हो, तो भी धर्मवान होता है। दूसरों के लिए निस्वार्थ काम आने और दूसरों को सुख देने और सहायता करने की घटनाएं पेश की गई और बताया गया कि इस प्रकार के व्यक्ति ही धर्मवान होते हैं। इस सभा में उपस्थित जन काफी प्रभावित हुए और धन्यवाद दे रहे थे। अगले दिनों की सभाओं का प्रोग्राम बताया गया और चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त की गई।

26 नवम्बर सुबह 9 बजे फिर सभा की गई। यह सभा भी बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में भी हाजरी पहले की तरह ठीक थी। भजन शाम जी और जगदीष जी ने मिलकर गाए।

इस सभा में बताया गया कि पशु बड़े से बडा होकर भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। मनुष्य अपने आप अपनी चालक भावनाओं का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। इनके सम्बन्ध में वह पूर्ण अन्धकार में है। अन्धेरे के कारण ही वह दुख उठा रहा है। अरस्तु महान तक ने आत्म हत्या की, बेकन का उदाहरण दिया गया। और आत्म अन्धकार की हानियों के उदाहरण दिए गए। धन सम्बन्धी अनुराग कैसे अन्धकार पैदा करता है और उसके द्वारा किस प्रकार उच्च श्रेणी के सेवक भी हानि उठाते हैं। हृदय को छूने वाले दृष्टांत ब्यान किए गए। यह सभा बहुत ही प्रभावशाली थी।

26 तारीख की रात की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने ही बताया कि देवात्मा की ज्योति ही हमारे व्यवहार ठीक हैं या गलत यह दिखाती है। उन्होंने श्रीमति सवित्री जी सिद्धू का उदाहरण दिया कि किस प्रकार उन्हें अपने माता के प्रति अपना घमण्डी व स्वार्थी रूप दिखाई दिया और वह माता - पिता की भगत बन गई। गुरू महाराज के प्रभावों ने उन पर अपना व्यवहार उज्जवल कर दिया। इसी प्रकार और पति पत्नियों को अपने व्यवहार नज़र आने के कारण, किस प्रकार भयानक नतीजे पैदा हुए, यह सारा ब्यान बहुत प्रभावशाली था।

27 तारीख की सुबह की सभा फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई इसमें बताया गया कि किस प्रकार ईटों और मसाले से भवन बनता है, जैसे गिणती सीखने से हिसाब आता है, अक्षर सीखने से भाषा आती है, उसी प्रकार उच्च गतियां करने से धर्म आता है। उच्च गति क्या होती है? कई बार उच्च

गतियां दिखने में उच्च होकर भी नीच क्यों होती है? किस प्रकार बड़े वा महान आदमी भी नीच गतियों में भागी बनकर हानि प्राप्त करते हैं, इन सब विषयों पर रोशनी डाली गई। उच्च भावों की अवश्यकता और उन्हें पैदा करने के संग्राम के विषय में बताया गया। अनचाहे परिवर्तन से ही हमें सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए, स्वंय चाहकर उच्च परिवर्तन पैदा करने के राह पर पड़ना चाहिए। श्रद्धा भाव क्या होता है और उसकी क्या महानता है इसके विषय में भी बताया गया, इसको पैदा करने की विधि बताई गई।

फिर शाम जी के प्रश्नों के उत्तर दिए गए। शुभ कामना के सम्बन्ध में बताया गया। उच्च भाव के लिए उच्च संगत से जुड़ना अवश्यक है।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि देव ज्योति के द्वारा अपना नीच रूप देखने से सुख, खुशी और उत्साह पैदा होता है। हीनता वा Depression पैदा नहीं होता। यह सभा यहां आखरी सभा थी। और जनों के भिन्न श्रीमान अरूण जैन जी ने रूड़की में विकासालय खोलने की प्रार्थना की। नवनीत जी ने महोत्सव पर दान मांगने की आज्ञा चाही। सब धर्म सम्बन्धी बहुत प्रभावित थे और खुशी - खुशी पार्टी को विदा किया।

इस प्रकार यह संग्राम किसी सीमा तक सफल रहा और पार्टी सहारनपुर की ओर रवाना हो गई।

सहारनपुर:- यहां सुमन जी चौहान के घर सभा की गई, जिसमें उनके परिवार के भिन्न प्रीती, संजय और उनके परिवारिक जन, अनिल गुप्ता जी और उनका परिवार आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि लम्बे समय तक यदि कोयला सूर्य की किरणों के सम्पर्क में रहे तो वह हीरा बन जाता है, इसी देवात्मा के प्रभावों में बैठकर नीच मनुष्य उच्च बन जाते हैं। देवात्मा से जुड़ने की बरकतें बताई गई। देव प्रभाव पाने के लिए उच्च संगत से जुड़ना अवश्यक है।

कुआं खेड़ा :- शाम को श्रीमान जी , वर्मा जी और देव सुमन जी सहारनपुर से यहां पहुंच गए। रात को एक सभा रखी गई, इसमें रतन सिंह जी का सारा परिवार, संग्राम सिंह जी, डाक्टर रजिन्द्र जी और उनका बेटा आदि आकर शामिल हुए। रतन सिंह जी ने बहुत श्रद्धा से भरकर भजन गाया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ब्यान किया कि नेचर ने भिन्न अस्तित्व पैदा किए हैं, जो भिन्न अंगों में हितकर प्रमाणित हो रहे हैं। परन्तु देवात्मा को नेचर ने सर्व्वांग हितकर्ता के रूप में पैदा किया है।

इसलिए मनुष्यमात्रा के लिए उनकी शरण परम अवश्यक है। मनुष्य अपनी सुख लालसाओं के कारण एक - एक आकर्षण के पीछे मारे - मारे फिरते हैं और देवात्मा से उदासीन होकर हानि उठाते हैं, सेवक सेविका अपनी संतान के लिए उत्तम खुराक, वस्त्र, पढ़ाई और मनोरंजन के साधन जुटाने की पूरी कोशिश करते हैं, परन्तु सर्वहित सम्पादक की शरण में रखने से उदासीन रहते हैं। जिससे बड़ी हानि उठाते हैं और दुख भोग रहे है। अगले दिनों की सभाओं का पता बताया गया।

28 नवम्बर की सुबह की सभा में विशेष रूप से माता - पिता के सम्बन्ध में थी जो "एक सभा" के शीर्षक से फरवरी अंक में दी गई है।

28 की रात को फिर एक सभा की गई। इस सभा में कुछ लड़के लड़कियां भी शामिल हुए। इस सभा में नीच सुख अनुरागों की भयानक लीला का वर्णन किया गया और बताया गया कि केवल देवात्मा ही इस लीला का नाश कर सकते है और उच्च भावों की स्वर्गिय लीला पैदा कर सकते हैं। सुन्दर उदाहरणों द्वारा इस विषय पर रोशनी डाली गई।

29 नवम्बर की सुबह यहां आखरी सभा थी। इस सभा में बताया गया कि विश्व में उच्च असरों का

खेल जारी है। नीच प्रभाव अपना काम कर रहे हैं और उच्च प्रभाव अपना काम कर रहे हैं। इन प्रभावों से ही मनुष्य बदल रहे है। देवात्मा के प्रभाव महान और उच्च हैं। इनको प्राप्त करना सबसे बड़ा लाभ है और इनसे वंचित रहना बहुत बड़ा घाटा। परिवारों को ऐसे वातावरण से जुड़कर लाभ उठाना चाहिए। यह सभा अच्छी प्रभावशाली थी। 300 रू० दान प्राप्त हुआ और उसके बाद पार्टी चंडीगढ़ रवाना हो गई।

(एक सेवक)

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़:- यहां पर बकायदा ईतवार के साधन होते रहे। इन सभाओं में स्थानीय जन अच्छी संख्या में आकर लाभ उठाते रहे। माता-पिता व्रत के बाद यहां भाई बहिन व्रत की सभा रखी गई, इसमें गुरू महाराज की शिक्षा व कारज का वर्णन किया गया। श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी, श्रीमान जसवन्त सिंह जी, श्रीमति सत्यावती जी सीकरी की हृदय स्पर्षिय घटनाएं बताई गई। अच्छा प्रभावशाली वातावरण बना।

4 फरवरी से श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से रवाना होकर दोपहर तक संगरूर पहुंच और वह, घण्टा रुक कर भटिंडे पहुंचे। वहां श्री तारा सिंह जी के पास गए। उनकी सेहत का हाल चाल पूछा।

थराजवाला:- यहां पर श्रीमान बलदेव सिंह जी के तीनों परिवारों को लेकर सभा करवाई गई, इसमें बताया गया कि मनुष्य को अपनी भलाई के लिए कई प्रकार की खोजें करनी पड़ी, हैं। यह भी बताया गया कि डाक्टर चन्दुलाल जी को किस प्रकार गुरू धारण करना पड़ा और उनके मिशन में सेवा करके उन्होंने किस प्रकार खुशी प्राप्त की।

5 फरवरी ईतवार को श्रीमान बलवन्त सिंह जी के तीनों बेटों और उनके परिवार को लेकर सभा की गई। उनकी ताई जी के पाविारिक जन भी शामिल हुए। सभा में बताया गया कि प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि मैं सेहत मन्द रहूं, अमीर हो जाऊँ, विद्या प्राप्त कर लूं या और पक्षों में बड़ा बन जाऊँ, परन्तु चाहने मात्र से कुछ प्राप्त नहीं होता। सेहत खराब होने के कारण बताए गए। गांव के लड़कों के न पढ़ने के कारण बताए गए, देव गुरू के साथ न जुड़ने के कारण बताए गए। जैसे सेहत प्राप्त करने वा विद्या प्राप्त करने के नियम हैं, उसी प्रकार गुरू महाराज के साथ जुड़ने के भी कारण है। सबसे बड़ा नियम यह बताया गया कि जैसे गेहूँ को 6 महीने में 4 बार पानी लगाने की अवश्यकता है। जो इस नियम को पूरा करेंगे, वह इस संगत से जुड़कर उच्च बरकतें पाएंगे। जिसके घर में सभा हो रही थी, उस लड़के ने 200 रू० दान दिया और उन्हें कल्याण सत्संग पर पहुंचने की प्रेरणा की गई।

गोनियाणा मण्डी:- 5 फरवरी की शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी गोनियाना मण्डी पहुंच गए। श्रीमान ज्ञान सिंह जी के घर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभा करवाई। इस सभा में तकरीबन 40 के लगभग हाजरी थी। इस सभा में बताया गया कि नीच जीवन क्या है, उसकी हानि क्या है? बहुत सरल शब्दों में बताया गया कि जीवन ज्योति क्या है और किस प्रकार जीवन के हानि लाभ को दर्शाती है। इस विषय को हितकर परिवर्तन की घटनाओं द्वारा बताया गया। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी कुछ ब्यान किया। सारी सभा बहुत impressive थी। महिमा सवाई से भी 2 कारों में कई जन आए और सभा से लाभ उठाया।

अगले दिन 6 फरवरी सवेरे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें देवात्मा के लासानी आर्विभाव और उनके हित-सम्पादक रूप के विषय में बताया गया। जिन कारणों से मनुष्य देवात्मा के ऐसे लासानी जहूर से लाभ उठाने से वंचित रह जाते है, उनका ब्यान किया गया। उपस्थित जनों ने अच्छा लाभ उठाया।

शाम को 8 बजे फिर एक सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि सम्बन्धों को त्यागना वा अपने कर्त्तव्यों की अवहेलना करना धर्म नहीं बल्कि अधर्म है। पाप वा पुन्य हम सम्बन्धों में ही करते है। उच्च भावों से जुड़कर जहाँ सम्बन्धों में मिठास आती है, मेल आता है, वहां भला भी होता है। सन्मान, श्रद्धा वा कृतज्ञता पर आधारित सम्बन्ध धार्मिक सम्बन्ध होते है। निज सुख वा स्वार्थ पर आधारित सम्बन्धों में अन्मेल वा टकराहट और पाप आते हैं।

अगले दिन 7 फरवरी सुबह यहां आखरी सभा की गई जो श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में परिवर्तन के नियम को समझने की कोशिश की गई। हमें किस प्रकार अपने स्वभाव वा भावों में हर पल आ रहा परिवर्तन दिखाई नहीं देता। इसलिए अपने भीतर आ रहे बुरे परिवर्तन के सम्बन्ध में हम फिकरमंद ही नहीं रहते। उदाहरणों के द्वारा बुरे परिवर्तन के भयंकर परिणामों के विषय में बताया गया। देव प्रभाव-दायक संगत के साथ सच्चे दिल से जुड़े रहने का फिकर रखने की आवश्यकता है। भली गतियां को घटते देखकर खौफ वा दुःख होना चाहिए। अपना मन मारकर भी भली गतियां करनी चाहिए। और जहां तक हो उन्हें बढ़ाना चाहिए नहीं तो बुरे परिवर्तन की चपेट में आना अवश्यक है। इस सभा में 300 रू० दान प्राप्त हुए।

कल्याणः- शाम को उक्त दोनों धर्म सम्बन्धी कल्याण पहुंच गए। यहां पर पहली सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस सभा में बताया गया अच्छे बनने का नाम धर्म है, मन्दिर, गुरूद्वारे जाने वा नाम जपने का नाम धर्म नहीं। हमारे बोल, व्यवहार वा दूसरों के प्रति आचार हितकर होने चाहिए। गुरू महाराज अपने प्रभावों से नीच मनुष्यों को उच्च बनाते है।

8 फरवरी सुबह की सभा श्रीमान बनदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में श्रीमान जी ने बताया कि हम अच्छा स्वास्थ, धन दौलत, मान सम्मान यश चाहते है, इसके लिए जैसे नियमों की पालना की आवश्यकता है, वैसे ही धर्म के भी नियम है। देवात्मा में अजब ज्योति वा शक्ति है। उसे प्राप्त करके ही हमें अपने दोष वा काली सूरत दिखाई दे सकती है, उसके ही द्वारा अपनी कालिख धो सकते हैं।

रात की सभा फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उसमें सम्मान भाव के लाभों के विषय में बताया गया। सम्मान और श्रद्धा भाव के लक्षणों को विस्तार पूर्वक बताया गया कि इसके बिना धर्म नहीं आता।

9 फरवरी सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। जिसमें बताया गया कि पु० भगवान हमारे नीच जीवनों को बदलकर हमें तारते हैं। उनके विधान-अनुसार केवल नीच जीवन से बचना काफी नहीं, उच्च जीवन पैदा होने से ही उच्च परिवर्तन आता है। गुण देखने से श्रद्धा भाव की उत्पति होती है, इससे आत्मा का हित होता है। हमें बार-बार दूसरों के गुणों के आगे नतमस्तक होने की आवश्यकता है। सभापति जी ने सबसे दूसरों के गुणों को बताने को कहा, जिससे बहुत अच्छा वातावरण बना। एक ससुर ने अपने पुत्रवधु के बहुत सुन्दर गुणों का वर्णन किया। एक जन ने गांव के एक नौजवान के भीतर हमदर्दी का वर्णन किया। एक बुर्जुग ने बताया कि

Regd. Postal No.Pb (0078) 2006
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

Registrar News Paper of India - Rules 1956
के अनुसार जरूरी जानकारी

1.	प्रकाशित स्थान	चण्डीगढ़
2.	अवधि	मासिक
3.	प्रिंटर का नाम	सूर्य लैज़र डेन
4.	पब्लिशर का नाम	स. बलदेव सिंह
	पता	मकान नं. – 3154, सैक्टर – 21 डी चण्डीगढ़
	राष्ट्रीयता	भारतीय
5.	एडीटर	स. बलदेव सिंह जी
	पता	उपरोक्त

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts